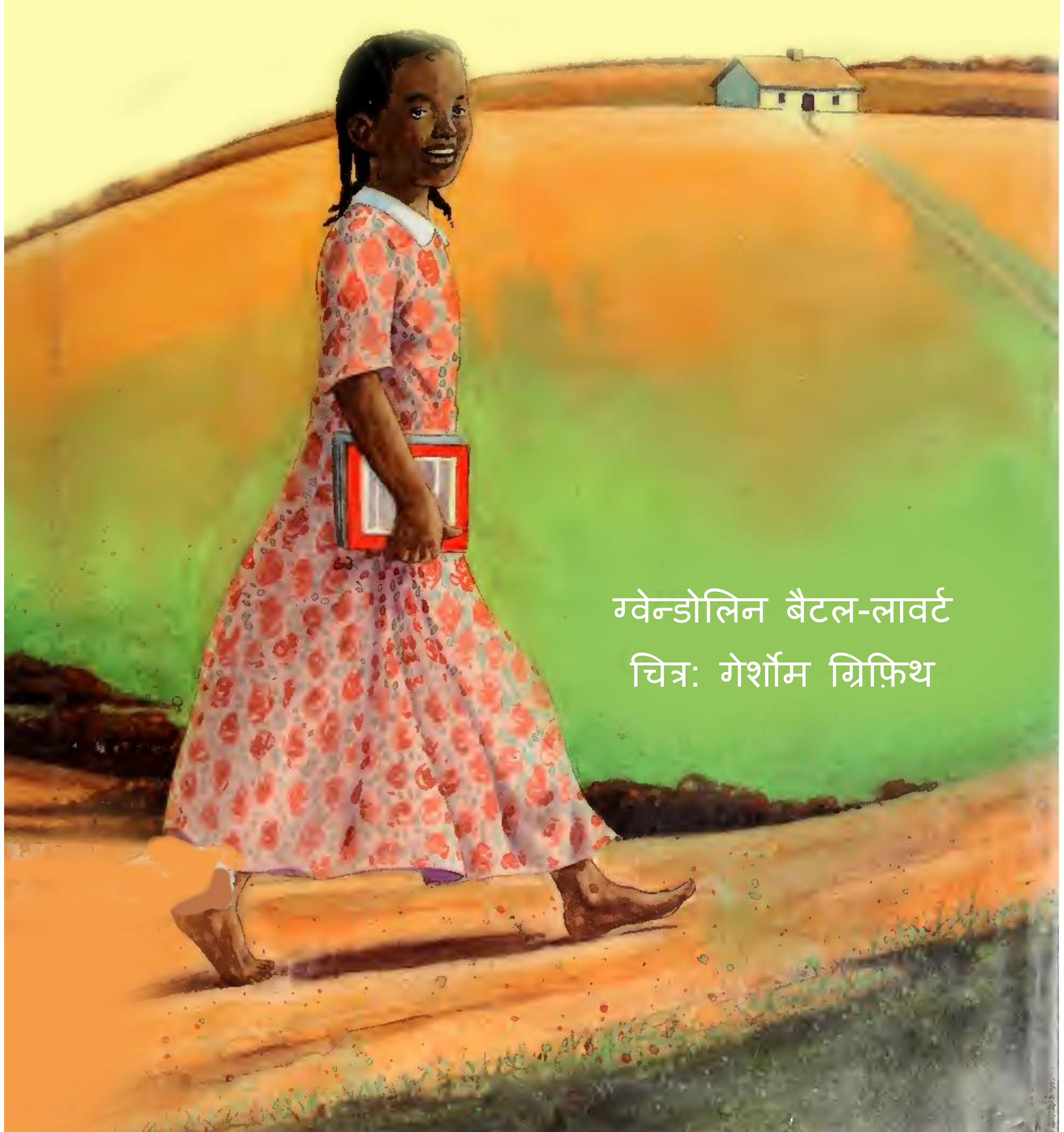
स्कूल जाना



ग्वेन्डोलिन बैटल-लावर्ट
चित्र: गेर्शोम ग्रिफ़िथ

वेज़ीली किसी भी चीज़ से ज़्यादा स्कूल जाना चाहती है. खेतों में काम करते हुए भी वह बस स्कूल के बारे में सोचती रहती है. जब अपने परिवार के लिए दोपहर का खाना बनाने की बारी आती है, तो वह पहले से कहीं ज़्यादा स्कूल के बारे में सोचती है. और जब ज़मींदार की बेटी, कैरोल ऐन, उसके बिना पहाड़ी पर स्कूल की ओर चल पड़ती है, तो वह बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर पाती. लेकिन वह पापा से जाने देने की कितनी भी मिन्नतें करे, पापा उससे कहते हैं कि उसे कटाई खत्म होने तक इंतज़ार करना होगा.

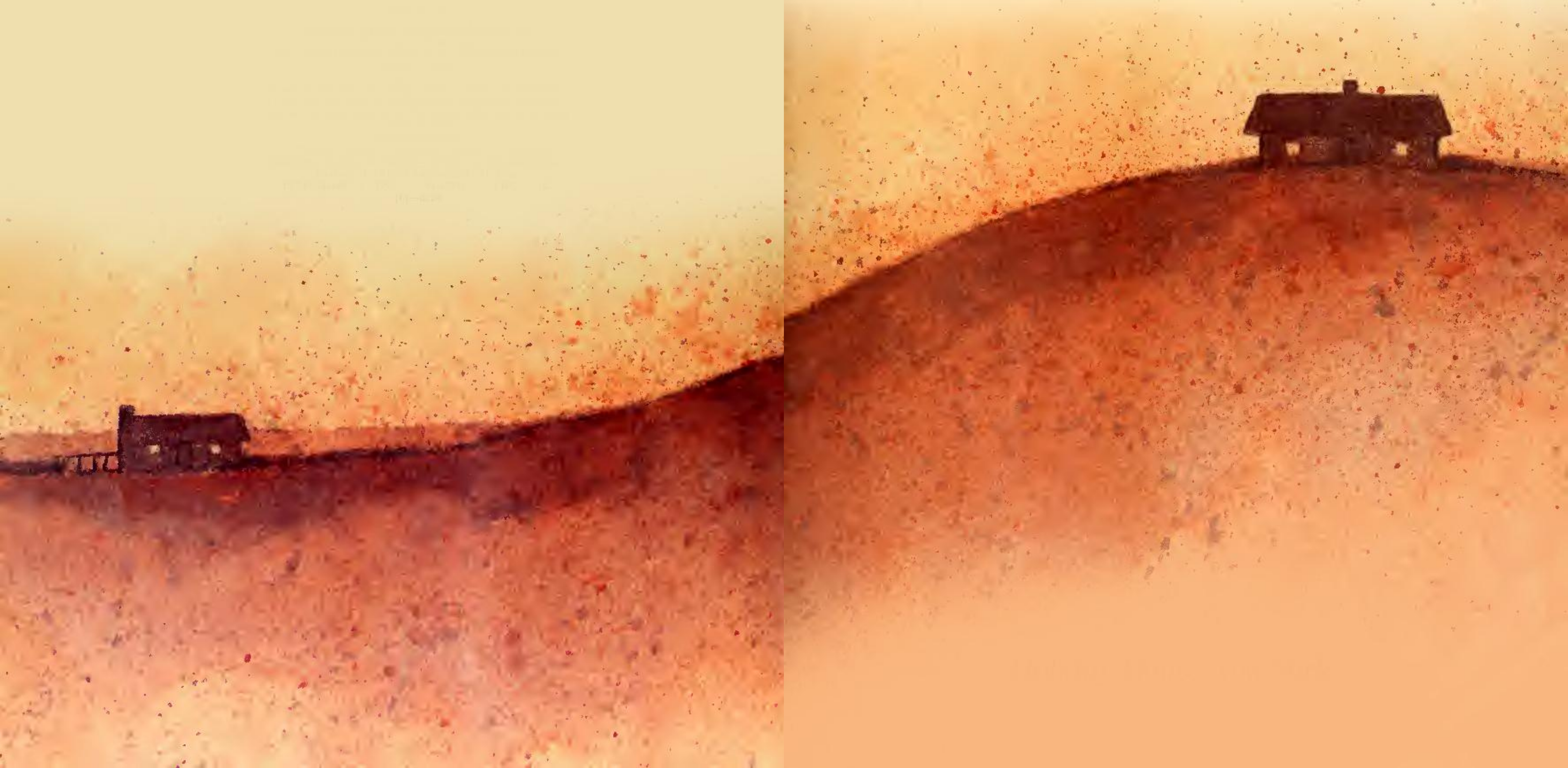
रसोई में कई मज़ेदार दुर्घटनाओं के बाद, वेज़ीली की लगन इस दिल को छू लेने वाली पारिवारिक कहानी में रंग लाती है-

स्कूल जाना



स्कूल जाना

ग्वेन्डोलिन बैटल-लावर्ट
चित्र: गेर्शोम ग्रिफ़िथ





लंबी टांगों वाली और मज़बूत, वेज़ीली खेतों की बच्ची थी. उसके पापा एक बटाईदार किसान थे. वह परिवार को एक राज्य से दूसरे राज्य ले जाते थे, कपास, सेब, टमाटर और मक्का तोड़ने के लिए. वे उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक जाते थे.

माँ, कर्टिस, मेली, आर्टिस क्विन, मर्टल फे, डोसी और सबसे छोटी वेज़ीली थीं. "पापा!" वेज़ीली ने पूछा. "मैं अभी स्कूल क्यों नहीं जा सकती?" पापा ने जवाब दिया, "बेटी, तुम स्कूल ज़रूर जाओगी. इतनी जल्दी मत करो. बस समय आने का इंतज़ार करो."

शिक्षक को पता था कि कटाई के समय तक उन्हें किसी भी बच्चे के स्कूल आने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए. कटाई के बाद ही बड़े और छोटे बच्चे स्कूल जाना शुरू करेंगे. लेकिन तब तक काम तो करना ही होगा.





पापा ने आवाज़ दी, "काम पर! काम पर! दिन का उजाला जल्दी उड़ जाता है. हमें काम करना है." सूर्योदय से सूर्यास्त तक वे कड़ी मेहनत करते थे. वे केवल दोपहर को आराम करते थे. तब खाने का समय होता था.

इस ख़ास हफ़्ते पापा ने गाया, "वेज़ीली, उठने का समय हो गया! उठने का समय हो गया! टिक-टॉक! उठने का समय हो गया!"

वेज़ीली बिस्तर से उतरी और पापा के पीछे-पीछे पीछे बरामदे में चली गई.

"अब घर पर रहकर खाना बनाने की तुम्हारी बारी है,"

पापा की एक खासियत थी, वे अपने खाने को लेकर बहुत सजग रहते थे. खाना बिलकुल सही तरीके से पकाना और उसमें मसाले डालना ज़रूरी था.

पापा ने कहा, "मुझे पता है तुम स्कूल जाने को लेकर बहुत उत्साहित हो. अब उसमें ज़्यादा दिन नहीं बचे हैं. अब समय उतना लंबा नहीं रहा जितना पहले था."

पापा ने देवदार की पेंसिल से बरामदे के पिछले कोने में सिर्फ़ वेज़ीली के लिए एक पतली, लहराती रेखा खींची.

"जब सूरज आसमान के बीचों-बीच पहुँचेगा, तो फिर इस रेखा पर छाया पड़ेगी. तब खाने का समय होगा. तब घंटी बजाना. तुम्हें पता है कि हमें अच्छा खाना चाहिए. खेत में काम करने के बाद बहुत भूख लग सकती है."



वेज़ीली रसोई की खिड़की के पास खड़ी थी. घर के आस-पास के खेत इतने पास थे कि वह उन्हें छू ही सकती थी. उसने अपने भाई-बहनों को इधर-उधर बिखरते हुए देखा.

उसने मकान मालिक की बेटी कैरोल ऐन की तरफ हाथ हिलाया. कैरोल ऐन को पहाड़ी पर स्कूल की ओर जाते देखकर उसका दिल दुख रहा था. काश वह भी उसके साथ जा पाती.



दोपहर का खाना बनाने का समय हो गया था. वेज़ीली ने बीन्स को एक बड़े बर्तन में डाला और उन्हें पानी से ढक दिया. वे चूल्हे पर धीरे-धीरे पकने लगे. वेज़ीली ने थोड़ा नमक डाला और आलू छीले. उसने उन्हें भी बर्तन में डाल दिया. फिर उसने थोड़ा और नमक डाला. माँ ने उसे बहुत पहले ही खाना बनाना सिखा दिया था.

सुबह ढलती गई.



जैसे ही वेज़ीली ने सब्ज़ियाँ हिलाईं, उसने खिड़की से बाहर देखा. स्कूल की इमारत धूप में चमक रही थी. शायद, अगर वह जल्दी करती, तो एक बार वहाँ चलकर टीचर को नमस्ते कह पाती. वह फिर भी दोपहर के खाने के समय तक वापस आ सकती थी. उसने दूर क्षितिज पर पापा को देखा. वह कतार दर कतार बोने में व्यस्त थे. वेज़ीली ने बर्तन में और नमक डाला. फिर वह दरवाज़े से भागी और पहाड़ी पर चढ़ने लगी. कदम-दर-कदम.





अचानक खेतों से पापा की आवाज़ हवा में तैरती हुई आई, "वेज़ीली! वेज़ीली! तुम घर वापस जाओ. तुम्हें वहां काम जो करना है." वेज़ीली का दिल तेज़ी से धड़क उठा. वह पहाड़ी से नीचे भागी और रसोई में घुस गई. उसने सब्ज़ियों को हिलाया और फिर से नमक डाला. फिर वह बरामदे में गई. सूरज ढल रहा था. खाने की घंटी बजाने का समय हो गया था.

टन! टन! टन! टन! टन! टन!



वेज़ीली ने अपने परिवार को खेत में चलते देखा. उसने आलू और फलियों पर थोड़ा नमक छिड़का. पापा दरवाज़े से अंदर आए और उनके पीछे-पीछे परिवार के बाकी लोग भी आए.

सब लोग लकड़ी की बड़ी मेज़ के चारों ओर बैठ गए. वेज़ीली ने सब्ज़ियों का बर्तन और एक दिन पुराने बिस्कुट का एक पैन मेज़ पर रख दिया. जैसे ही वे खाना खा रहे थे, पापा अचानक खाँसने लगे. "वेज़ीली, आज तुमने नमक थोड़ा ज़्यादा ही डाल दिया था. बच्ची, कल ज़्यादा ध्यान रखना. मेरे लिए एक गिलास ठंडा पानी लाओ."



अगले दिन पापा ने गाया, "उठने का समय हो गया है! काम पर! काम पर! हमें काम करना है."

माँ ने कहा, "वेज़ीली, आज बगीचे की कुछ ताज़ी सब्ज़ियाँ पकाना. तुम्हारे पापा को ये नरम सब्जियां पसंद हैं. लाइन पर ध्यान रखना मत भूलना."

जैसे ही सूर्योदय ने ओस को भगाया वैसे ही वेज़ीली ने पत्तागोभी, मटर, प्याज और सलाद पत्ते इकट्ठा किए. सूरज की गर्मी उसके कानों को गुदगुदा रही थी. माँ ने सिखाया था कि उसे क्या करना है. वेज़ीली ने सब्ज़ियों को एक साफ कपड़े पर सुखाया. उसने पत्तागोभी और मटर को एक बर्तन में डाला. हिलाकर और थोड़ा सा नमक डालकर, उसने पापा के दोपहर के भोजन के लिए उन्हें धीरे-धीरे पकाया.





वेज़ीली बरामदे में बैठी पापा को घर से दूर जाते हुए देख रही थी. जब वे घास उखाड़ने के लिए झुके तो उनकी बड़ी पुआल की टोपी ऊपर-नीचे उछल रही थी. स्कूल दोबारा जाने का यही सही समय था. धूल भरी धूप वाली सड़क पर उछलती-कूदती, दौड़ती हुई, वह लगभग आधी ही पहुँची थी कि पापा ने पुकारा, "वेज़ीली, तुम्हें घर पर काम करना है!"

उसने ऊपर आसमान की ओर देखा, नीला और सुनहरा. उसने सूरज को आसमान के बीचों-बीच जाते देखा. लगभग खाने का समय हो गया था. वेज़ीली दौड़कर घर लौटी. जैसे ही वह पीछे के बरामदे तक पहुँची, उसे सब्ज़ियों की खुशबू आई. वह जल्दी से अंदर गई और उन्हें एक कटोरे में रख दिया. वह गोभी और मटर में अंतर नहीं बता पा रही थी. उसके पास बगीचे से और सब्ज़ियाँ इकट्ठा करने का समय नहीं था. सूरज अपनी सीमा पार कर चुका था. उसने घंटी बजाई.

सबने चुपचाप खाना खाया. आख़िरकार, पापा ने अपनी प्लेट से ऊपर देखा और बड़बड़ाते हुए बोले, "वेज़ीली, मुझे मसली हुई सब्ज़ियाँ पसंद नहीं हैं. मुझे वे नरम और कुरकुरी पसंद हैं. तुम्हें खाना पकाने के काम पर ज़्यादा ध्यान देना होगा. समय उतना लंबा नहीं है जितना पहले था."



अगले दिन पापा ने आवाज़ दी, "उठने का समय हो गया है! काम पर जाना है! दोपहर के सूरज तक काम करना है!"

माँ ने कहा, "वेज़ीली, बगीचे की तोड़ी ताज़ी मटर चूल्हे पर धीरे-धीरे पक रही है. बस उन्हें बीच-बीच में थोड़ा सा हिलाते रहना. एक पैन में मक्का की ब्रेड रख देना. तुम्हें पता है तुम्हारे पापा को मटर के साथ मक्का की ब्रेड बहुत पसंद है. कुछ टमाटर काट लेना. तुम्हारे पापा को वे रसीले और पके हुए टमाटर बहुत पसंद हैं."

वेज़ीली ने कहा, "माँ, समय इतना धीरे क्यों गुज़रता है? मुझे स्कूल जाना है."

जैसे ही वे खेतों में गए, माँ ने कहा, "बेटा, बस समय का कुछ और इंतज़ार करो."

इंच-इंच करके, सूरज लहराती रेखा के पास आता गया.



माँ ने वेज़ीली को कई बार मक्का की ब्रेड बनाना सिखाई थी. वेज़ीली ने अपने सबसे बड़े बर्तन में एक कप मक्का का आटा, एक चुटकी नमक, एक कप मैदा, एक चम्मच बेकिंग पाउडर और आधा जार ताज़ा दूध मिलाया. उसने इस मिश्रण को एक चिकने तवे पर डाला. फिर उसने इसे पापा के ठीक सामने ओवन में रख दिया. कॉर्नमील की खुशबू पूरे घर में फैल गई.



वेज़ीली ने कपड़े सुखाने की रस्सी से कपड़े उठाए. उसने सूरज के रेखा पार करने का इंतज़ार किया. जैसे ही उसने अपनी पैंट ऊपर उठाई, उसने पापा को अपनी बड़ी पुआल की टोपी उतारते देखा. उन्होंने अपने माथे से पसीना पोंछा,

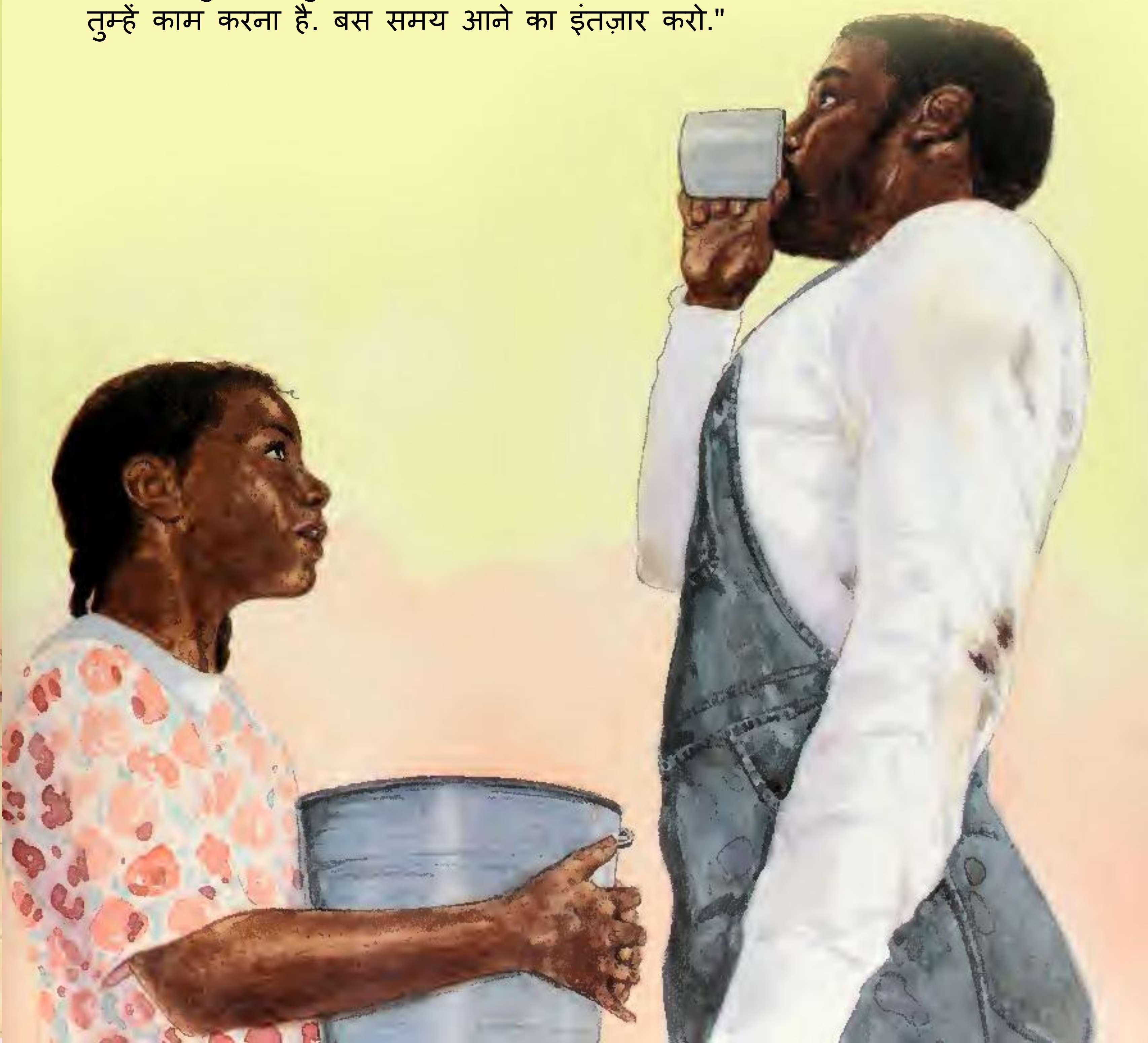
वेज़ीली उनके लिए ठंडे कुएँ के पानी की एक बाल्टी लेने के लिए दौड़ी.

"पापा, अब मैं अब स्कूल क्यों नहीं जा सकती?" वेज़ीली ने पूछा.

पापा ने उसके कंधे थपथपाए, आँख मारी और कहा, "तुम स्कूल जाओगी. बस थोड़ा और इंतज़ार करो. वो समय तुम्हारे सोचने से पहले आ जाएगा."

"पापा, मुझे खाना बनाने की ज़रूरत नहीं है. मुझे खेतों में आपकी मदद करनी है. आप जानते हैं कि मैं बहुत तेज़ काम करती हूँ. मेरी मदद से, हम झटपट काम निपटा लेंगे," वेज़ीली ने कहा.

"बेटी, मुझ पर गुस्सा मत करो," पापा ने कहा. "घर वापस जाओ. तुम्हें काम करना है. बस समय आने का इंतज़ार करो."



वेज़ीली धीरे-धीरे घर की ओर चली. स्कूल के बारे में सोचते हुए, वह झुकी और कुछ बटरकप उठाए. जब वह पिछले बरामदे में पहुँची, तो रसोई के दरवाज़े के नीचे से धुआँ रिस रहा था. वेज़ीली रसोई में भागी. घुटन और खाँसी के साथ, उसने ओवन का दरवाज़ा खोला. मक्के की रोटी दिखाई नहीं दे रही थी. धुएँ को हवा देते हुए, वह लाइन के बारे में भूल गई. घंटी बजाने का समय नहीं था. उसने तवे का हैंडल पकड़ लिया. आहा! आहा! उसके चेहरे पर आँसू बह निकले. तवा ज़मीन पर गिर गया. पापा दरवाज़े से अंदर आए.



"ओह, पापा, आज मक्के की रोटी कोई नहीं खा सकता," वेज़ीली ने कहा.

पापा ने उसके छालों वाले हाथ ठंडे बर्तन के पानी में डाल दिए. उन्होंने ध्यान से उसके हाथों पर ठंडा मक्खन फैलाया. फिर पापा ने उन्हें सफ़ेद कपड़े की पुरानी पट्टियों में कसकर लपेट दिया.

"वेज़ीली, मैंने तुमसे कहा था," पापा ने समझाया. "हमारे पास बर्बाद करने के लिए खाना नहीं है. यह समय काफी कठिन है. तुमने बीन्स और आलू में बहुत ज़्यादा नमक डाल दिया है. सब्ज़ियाँ गूदेदार हो गई थीं. और अब मकई की रोटी भी जल गई है."

उसके पापा ने सिर खुजलाया और आह भरी,

"समय उतना नहीं रहा जितना पहले था," उन्होंने उसके सिर पर थपथपाते हुए कहा.

वेज़ीली ने पापा को गले लगाया. उसने कड़ाही से मकई की रोटी निकाली. चाकू से उसने नीचे का जला हुआ हिस्सा खुरचा और मकई की रोटी को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटा. सब लोग मेज़ के चारों ओर बैठकर खाना खाने लगे.

"काम पर वापस! काम पर, क्योंकि रात होने वाली है," पापा ने गाया.



एक दिन बाद वेज़ीली बिस्तर पर लेटी हुई थी. वह पापा के जागने वाले गीत का इंतज़ार कर रही थी. "उठने का समय हो गया! उठने का समय हो गया! काम पर जाना है!"

वेज़ीली के नंगे पैर ठंडे लकड़ी के फर्श पर पड़े. अपने परिवार को अलविदा कहते हुए, वह सामने के बरामदे में अकेली खड़ी थी. उसके भाई-बहन खेतों में इधर-उधर बिखरे हुए थे. पापा इतनी दूर चले गए थे कि पेड़ों के बीच से वह उन्हें देख नहीं पा रही थी. वेज़ीली नमकीन बेकन धोने के लिए वापस अंदर गई. अचानक उसने अपना नाम सुना. वह कैरोल एन थी.



"वेज़ीली, आओ और मेरे साथ स्कूल चलो," उसने कहा.

वेज़ीली ने मांस फेंका और रसोई से बाहर भागी, कैरोल एन के साथ स्कूल के रास्ते पर चली गई. कैरोल एन को डर नहीं लगा. कैरोल एन ने उसे अपनी एक किताब पकड़ा दी. लेकिन वेज़ीली जानती थी. वह स्कूल के आँगन में खड़ी थी. टीचर, चेम्बर्स, उनसे दरवाज़े पर मिलीं.

टीचर ने कहा, "अरे, वेज़ीली, तुम्हें देखकर बहुत अच्छा लगा. कटाई का समय लगभग खत्म हो गया है. फिर मेरा स्कूल जल्द ही बच्चों से भर जाएगा, अंदर आ जाओ!"

वेज़ीली ने एक कमरे वाले स्कूल में झाँका. फिर उसने खेतों में पापा को ढूँढ़ा, वे कहीं नज़र नहीं आ रहे थे.



"मैं ज़्यादा देर नहीं रुक सकती, मुझे कुछ खाना बनाना है," उसने कहा.

वह अंदर आई और पढ़ाई वाले कमरे में बैठ गई.

मिस चेम्बर्स ज़ोर-ज़ोर से कुछ पढ़ने लगीं. उनकी आवाज़ इतनी संगीतमय थी कि शब्द कमरे में तैर रहे थे. ऐसा लग रहा था जैसे वेज़ीली हमेशा के लिए वहीं बैठकर उन्हें सुनती रही हो.

अचानक वेज़ीली ने देखा कि खिड़की से धूप की किरणें आ रही हैं और उसके कंधों को गर्म कर रही हैं. उसे खाना बनाना याद आ गया. वह उछलकर घर वापस भागी.





वह रसोई में भागी. वहाँ सन्नाटा था. चूल्हे पर कुछ भी नहीं पक रहा था. फलियाँ पकाने में बहुत ज़्यादा समय लगेगा. सब्ज़ियाँ बगीचे से लानी थीं. उसके लिए समय ही नहीं था. बाहर देखा, सूरज रेखा पार कर चुका था. घंटी बजाने की ज़रूरत नहीं थी. पापा और वेज़ीली आमने-सामने खड़े थे. "पापा," वेज़ीली चिल्लाई, "आज मेरे पास खाना बनाने का समय नहीं था.“

"बेटी, मैं तुम्हें खेतों से देख रहा था. तुम मुझे देख ही नहीं पा रही थी. दिन-ब-दिन, कदम-दर-कदम तुम उस स्कूल तक पहुँच गई हो. मैंने तुम से बार-बार कहा है, हमें अच्छा खाना चाहिए," पापा ने झुंझलाते हुए कहा.

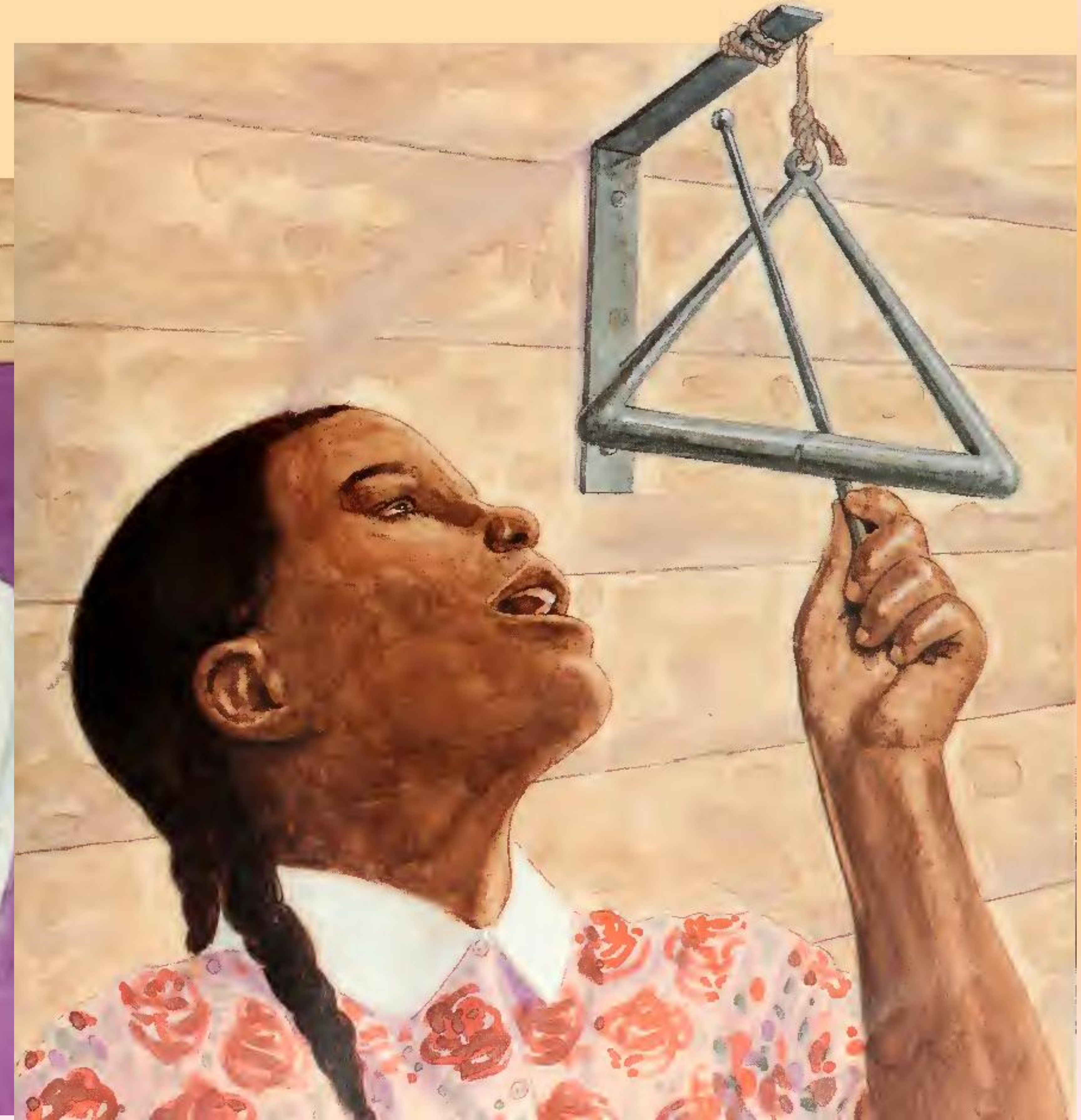
माँ ने जल्दी से कुछ तले हुए मक्के के पकौड़े बनाए. वेज़ीली ने मदद की. सबने खाना खाया.



"काम पर जाओ, काम पर जाओ!" पापा ने पुकारा. "जब तक दिन है, काम करो."

सप्ताह का आखिरी दिन आ गया. वेज़ीली को पापा के जागने के गीत की ज़रूरत नहीं थी. खेतों में जाते समय उसने अपने परिवार के लोगों से अलविदा नहीं कहा. उसे खाना बनाना था. सूरज ने समय बर्बाद नहीं किया. स्कूल के बच्चों की हँसी हवा में तैर रही थी. वेज़ीली धूल भरी धूप वाली सड़क की ओर नहीं बढ़ी. वह बस रसोई में ही रही और दोपहर का खाना तैयार करती रही. जब सूरज की रोशनी रेखा पार हुई, तो उसने घंटी बजाई.

टन! टन! टन! टन! टन! टन!





पापा बरामदे में आए. उन्होंने कहा, "मुझे नहीं पता तुमने क्या बनाया है, वेज़ीली, लेकिन तुम्हारे बनाए खाने की खुशबू खेतों में तैर रही थी."

वेज़ीली हँसी, "ओह, पापा!"

सबने मेज़ पर अपनी जगह ले ली. वेज़ीली ने मेज़ के बीच में बगीचे की सब्ज़ियों का सूप का एक बड़ा बर्तन रख दिया. पत्तागोभी, प्याज़, मक्का और टमाटर नरम और पक चुके थे. मक्के की रोटी सुनहरी भूरी और किनारों से कुरकुरी थी, बिल्कुल जैसी पापा की पसंद थी. उसने उसे चौकोर टुकड़ों में काटा.

वेज़ीली ने सबके कटोरे में सूप डाला. उन्होंने अपने चम्मच अपने कटोरे में डुबोए. उन्होंने एक साथ सूप का स्वाद चखा. मिर्च पाउडर, नमक और तीखी मिर्च के भरपूर मिश्रण से उनके मुँह में पानी आ गया.

पापा उछल पड़े, उड़ते हुए पंछी की तरह अपनी बाँहें फड़फड़ाते हुए.

उन्होंने कहा, "पानी! पानी! मेरा मुँह तो आग का गोला है!"

माँ, कर्टिस, मेली, मर्टल फे, डोसी और आर्टिस क्विन अपने मुँह में पंखा झल रहे थे और किसी बड़े भाप इंजन की तरह हाँफ रहे थे. वेज़ीली ने सबको पानी के बड़े गिलास दिए. लेकिन पापा ने घड़े से पिया.



"वाह!" पापा ने कहा. "वेज़ीली, मुझे लगता है आज तुमने कमाल कर दिया. यह टेक्सास के इस हिस्से का सबसे गरमागरम सूप होगा." वेज़ीली चिल्लाई, "ओह, पापा, मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था!" पापा हँसे,

"बेटी, अब तुम्हें इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है. अब तुम सब लोग मेरे पास आओ," पापा ने कहा.

पापा घर के पीछे वाले कुएँ की ओर ले गए. ऐसा लग रहा था जैसे वे कुएँ को पूरा पी जाएँगे.

उन्होंने मुड़कर वेज़ीली को उठा लिया.

"फसल लगभग कट गई है! अब तुम स्कूल जाओगी, वेज़ीली!" पापा ने गाया. "अब तुम्हारे सीखने का समय या गया है."

वेज़ीली ने कहा, "पापा, मैं स्कूल जा सकती हूँ और खाना भी बना सकती हूँ." पापा मुस्कुराए और बोले, "बेटी, हम खाना बनाने का काम तुम्हारी माँ और तुम्हारी बहनों पर छोड़ देंगे. परिवार ने यह तय किया है कि अब तुम जल्दी ही स्कूल जाओगी. उस स्कूल में तुम्हें सब जानते हैं. हम जानते हैं कि तुम क्लास में सबसे अच्छी रहोगी."





वेज़ीली ने पापा को गले लगाया. फिर वह दौड़कर उस लहराती हुई रेखा की ओर गई. उसकी मुस्कान अंतहीन लग रही थी. पापा की देवदार पेंसिल के रबड़ से उसने वो रेखा मिटा दी. अब उसे और खाना नहीं बनाना था! स्कूल जाने का वो बिल्कुल सही समय था.



